एक पेड़ की व्यथा–मैं हूं पेड़।

डॉ. रमा मेहता
रा.ज.सं., रूड़की

मैं हूं पेड़। मैं तुम्हें सब कुछ देता। बदले में कुछ भी न लेता।
फूल देता, फल देता, सूखने के बाद लकड़ी देता।
और जो सबसे आवश्यक कहलाती, प्राणवायु, ऐसी ऑक्सीजन वो भी मैं ही तुम्हें देता।
मैं हूं पेड़। मैं तुम्हें सब कुछ देता। बदले में कुछ भी न लेता।
बदले में तुम मुझे क्या देते ? बताओ तो जरा। सोचो तो जरा।
हां लेकिन तुम काटते हो मेरी टहनियां, मेरी शाखाएं, मेरा तना।
और मुझे लंगड़ा व लूला बनाते हो।
मैं हूं पेड़। मैं तुम्हें सब कुछ देता। बदले में कुछ भी न लेता।
तुम रूठ जाओ तो क्या होगा नुकसान ? कुछ भी नहीं फिर भी तुम्हें मनाती हैं मां और बहन
मैं रूठ जाऊं तो क्या होगा ? कौन मनाएगा मुझे,
और मैं नहीं माना तो!
ऑक्सीजन कौन देगा तुम्हें, वर्षा भी नहीं होगी, पानी नहीं मिलेगा।
सूर्य के प्रकोप से कौन बचाएगा, पथिक को विश्राम कहां मिलेगा।
तुम्हें फल, फूल, दवा और लकड़ी कौन देगा। सोचा है तुमने कभी ?
मैं हूं पेड़। मैं तुम्हें सब कुछ देता। बदले में कुछ भी न लेता।
मैंने देखा है आप मुझे रजिस्टरों में मुझे खूब लगाते हो।
लगाते दस और सौ बताते हो, और चल पाते हैं उनमें से भी मात्र कुछ पेड़
बताओ मुझे, तुमने जो पेड़–पौधे लगाए, उनको पानी कितनी बार दिया।
कितनों की सुरक्षा की और पेड़ बनाया।
हां मैं स्वयं जब अपनी संतति फैलाने की कोशिश करता हूं।
अपने बीजों को हवा से दूर–दूर फेंककर उगाना चाहता हूं।
तो तुम उसमें भी डाल रहे हो रूकावट
बताऊं कैसे ?
तुमने जमीन को पॉलिथीन की थैलियों से बंजर बना दिया है
इन थैलियों ने जमीन में फैला रखा है अपना साम्राज्य
ये थैलियां मेरे बीज को, मेरी जड़ों को जमीन में जाने नहीं देती
मुझे उगने को पनपने को, जगह नहीं देती
अगर यही स्थिति रही तो,
एक दिन धरा हो जाएगी मुझसे वीरान, मिट जाएगा धरा से मेरा नामो–निशान
भला मेरा तो इससे क्या जाएगा, पर बताओ मानव ऑक्सीजन कहां से पाएगा।
मैं हूं पेड़। मैं तुम्हें सब कुछ देता। बदले में कुछ भी न लेता।
मुझे लगाकर ऐसे ही छोड़ देने वाले, मेरे नाम पर रिकार्ड बनाने वाले
मेरी परवरिश नहीं करने वाले, तुम्हें तो सजा मिलनी चाहिए
सजा भी ऐसी वैसी नहीं बल्कि, भ्रूण हत्या करने वाले को मिलती है जैसी।
क्योंकि पौधों को लगाकर उनकी रखा न करना, उसे मरने के लिए छोड़ देना भ्रूण हत्या के समान है।
मुझे यह सब कहना पड़ा। अपनी पीड़ा को व्यक्त करना पड़ा
क्योंकि मैं चाहता हूं आपका भला, आप भी चाहो मेरा भला।
मैं हूं पेड़। मैं तुम्हें सब कुछ देता। बदले में कुछ भी न लेता।